International Journal of Applied Research 2017; 3(10): 169-171

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(10): 169-171
www.allresearchjournal.com
Received: 25-08-2017
Accepted: 26-09-2017

अल्का सिंह
शोध छात्रा समाजशास्त्र,
अवधेश प्रताप सिंह वि.वि.,
रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

केके सिंह
प्राध्यापक समाजशास्त्र,
शा. ठा.रणमत सिंह महाविद्यालय
रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Correspondence
अल्का सिंह
शोध छात्रा समाजशास्त्र,
अवधेश प्रताप सिंह वि.वि.,
रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

जन–संचार का युवाओं में प्रभाव

अल्का सिंह एवं केके सिंह

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र रीवा नगर निगम क्षेत्र के अन्तर्गत वार्ड क्र0 5 के युवाओं में जनसंचार में युवाओं की भूमिका का अध्ययन पर आधारित है। जनसंचार का अर्थ जनता के बीच विभिन्न माध्यमों से किया जाने वाला संचार है। जनसंचार का वर्तमान समय इसके परिपक्व समाज की मनोदशा, विचार, संस्कृति आम जीवन दशाओं को नियंत्रित व निदेशित कर रहा है। इसका प्रवाह अति व्यापक एवं असीमित है। जनसंचार माध्यमों द्वारा समाज में प्रत्येक व्यक्ति को अधिक से अधिक अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त हो रहा है।

शब्द कुंजी : रीवा नगर निगम, वार्ड, जनसंचार, युवा एवं प्रभाव

1. प्रस्तावना
प्रति पुष्टि जन–संचार प्रक्रिया को प्रभारी बनाता है जन–संचार से मिली सूचनाओं पर श्रोता की क्या प्रतिक्रिया है और सूचना का उस पर क्या प्रभाव पड़ा हैं आदि की जानकारी प्रति पुष्टि के द्वारा हो जाती है। जन–संचार के विकास ने भौगोलिक एवं समय की सीमा को भी तोड दिया है। जन सचांर के कारण ही 'ग्लोबल विलेज' की परिकल्पना साकार हो रही है। जन–संचार की विशेषताओं में एक विशेषता यह है कि व्यक्ति (संदेश प्राप्तकर्ता) उस संदेश या वस्तु की चयन करते है जो उनकी मान्यताओं और विश्वासों के अनुकूल होती है।

2. जनसंचार के साधनों की भूमिका
इस प्रकार प्राचीन काल से लेकर आज तक हमारी सामाजिक परम्पराओं, मान्यताओं विश्वासों तथा सस्कृति में परिवर्तन आये है। आधुनिकरण की प्रवृति के परिणामस्वरूप प्राचीन प्रचलित विश्वासों तथा सास्कृति में परिवर्तन आये है जिसमें जनसंचार के साधनों की भूमिका सर्वाधिक है, क्योंकि यदि आज भारत से लेकर अमेरिका, चीन से लेकर ब्रिटेन तक किसी एक ही विषय के समाचारों से अवगत होते है संस्कृति आदान–प्रदान करते है तो ये भी जनसंचार के साधनों की ही देन है। जन–संचार के साधनों ने प्रचलित विश्वाशों तथा संस्कृतियों के सुदृढीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन तथा कार्य निम्न प्रकार किया है–

1. प्रचलित विश्वाशों तथा संस्कृति के संरक्षण और हस्तान्तरण द्वारा
2. सांस्कृतिक आदान–प्रदान
3. परम्परागत प्रचलित विश्वासो तथा संस्कृति में निहित दूषित तत्वो के स्थान पर जनसंचार के साधन नए विश्वास और विश्वास के पीछे निहित मूल्य धारणा तथा संस्कृति में गतिशीलता वाले तत्वों को सम्मिलित करते है।
4. जड़ तथा अन्यावैहारिक विश्वासों की समाप्ति

3. जन–संचार एवं युवा
जनसंचार के साधनों के द्वार देश–विदेश में युवाओं की स्थिति पर प्रकाश डाला जाता हैं जिससे युवाओं में आत्मविश्वास और भेद जिससे युवाओं में आत्मविश्वास और भेद भावों से लड़ने की हिम्मत उत्पन्न होती है। जन–संचार के साधनों के बिना हम वर्तमान जीवन की कल्पना भी नही कर सकते है।

ये केवल हमे ज्ञान प्रदान करते हैं अपितु जागरूक बनाते है। वरन् मनोरंजन तथा ज्ञान को सुग्राह्य बना कर प्रस्तुत करते है। जो प्रत्येक आयु एवं युवा वर्ग के व्यक्तियों हेतु लाभप्रद बन जाता है। इन अभिकरणो द्वारा युवा सुदृढता हेतु लेख, चित्र, रेखांकन कहानियाँ, कविताएँ, उपन्यास, डाक्यूमेन्ट्री, सूचनाएँ आँकड़ो का प्रस्तुतीकरण इस प्रकार किया जाता है कि उसकी अमित छाप लोगो के मनोमस्तिक पर पड़ती है। कितने अभिभावक ऐसे है जिन्होंने जनसंचार के माध्यमों से प्रभावित होकर

अपने युवाओं को आगे बढने के लिये मार्ग प्रसस्त किया और युवाओ ने जीवन में कुछ करने का संकल्प ले लिया और युवाओं को सर्वागीण विकास की प्रक्रिया तथा मूल प्रवृतियों के मार्गन्तरीकरण ओर शोधन प्रक्रिया सम्पन्न होती है। जहां युवाओं के विचारों, विवेक, शक्ति तथा वृद्वि को परिमार्जन शारीरिक विकास आत्म–विश्वास की उत्पत्ति, स्वावलम्बन आत्म–विश्वास, धेर्य, प्रेम, तथा सहयोग, सामूहिकता की भावना की सीख एक साथ प्रदान की जाती है।

शिक्षा द्वारा मानसिक क्षेत्र के अन्तर्गत विविध क्रियाओं युवाओं का मानसिक विकास होता है। जीवन की तैयारी तथा आत्म–ज्ञान प्रदान किया जाता है। युवाओं को आर्थिक आत्म निर्भरता की शिक्षा प्रदान की जाती है। जो व्यावहारिक जीवन की सफलता के लिए अतिआवश्यक है। समय समय पर युवाओं को राष्ट्रीयता की भावना का विकास बिना किसी भेदभाव के किया जाता है, तथा उनमें नेतृत्व गुणों का विकास किया जाता है। राष्ट्रीय विषयों के साथ–साथ अन्तर्राष्ट्रीय विषयों से अवगत कराया जाता है। ताकि वे अन्तराष्ट्रीय शन्ति सहयोग तथा सद्भावना की स्थापना में योगदान दे सकते है, देश के युवाओं को आर्थिक, उदारीकरण, तथा भूभण्डलीकरण की प्रवृतियों, संर्वग, मनोविज्ञान इत्यादि क्षेत्रों को अवगत कराना जनसंचार एक सशक्त माध्यम है।

4. पूर्व अध्ययन समीक्षा

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने युवाओं में जनसंचार में युवाओं की भूमिका का अध्ययन पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – कुदरा (2009)[1], पचौरी (1994)[2], राजगढ़िया (2008)[3], रट्[4] एवं वर्मा व सुजाता (2007)[5] ने जनसंचार बदलते परिपेक्ष्य से सम्बन्धित कार्य किये है।

5. शोध क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन रीवा नगर निगम क्षेत्र के अन्तर्गत वार्ड क्र0 5 के युवाओं में जनसंचार में युवाओं की भूमिका का अध्ययन किया गया है, जिसने 50 युवाओं से प्रस्तुत विषय पर साक्षात्कार द्वारा तथ्यों से प्राप्त किया गया है तथा उनका विश्लेषण किया गया हैं इस अध्ययन में 20–35 शिक्षित युवा वर्ग को सम्मलित किया गया हैं, सुविधानुसार निदर्शन द्वारा सूचनादाताओं का चयन किया गया हैं, इस अध्ययन द्वारा युवाओं के समक्ष 3 प्रश्न जनसंचार से मानसिक विकास जनसंचार से आर्थिक सृहदृीकरण एवं जागरूकता से सम्बंधित है, जनसंचार से मानसिक विकास को प्रस्तुत किया गया हैं, साक्षात्कार–अनुसूची तैयार की जाकर अतिरिक्त महत्वपूर्ण प्रश्नों को युवाकों के समक्ष प्रस्तुत किया गया है।

6. शोध विधि

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन के विधिवत सम्पादन के लिए निम्न शोध विधियों का चयन किया गया है–

6.1 सर्वेक्षणात्मक विधि

अनुसंधान की वह पद्धति जिसके अन्तर्गत वर्तमान समय एवं स्थितियों में विद्यमान प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है, सर्वेक्षण विधि कहलाती है।

इस विधि में पूर्व निर्धारित प्रश्नों के माध्यम से प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं अनुसूची द्वारा जानकारी प्राप्त की जाती है। प्राप्त जानकारी या प्रदत्तों का संकलन करने के पश्चात् उनका वर्गीकरण सारणीयन प्रदत्तों से प्राप्त जानकारी की व्याख्या एवं मूल्यांकन किया जाता है।

7. शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने अपने न्यादर्श के वांछित आँकड़ों के चयन हेतु प्रश्नावली उपकरण को प्रयोग किया है।

8. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयेाग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

तालिका 1: मानसिक विकास का विवरण

क्र0	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	जन–संचार के माध्यम से मानसिक विकास हुआ	45	95
2.	जन–संचार के माध्यम से मानसिक विकास नहीं हुआ	5	5
	कुल योग	50	100

प्रस्तुत तालिका क्र0 1 से स्पष्ट है की जनसंचार के माध्यम से युवा 95 प्रतिशत मानते है की मानसिक विकास हुआ है। वही 5 प्रतिशत युवा ये मानते है की जनसंचार से मानसिक विकाश नही हुआ।

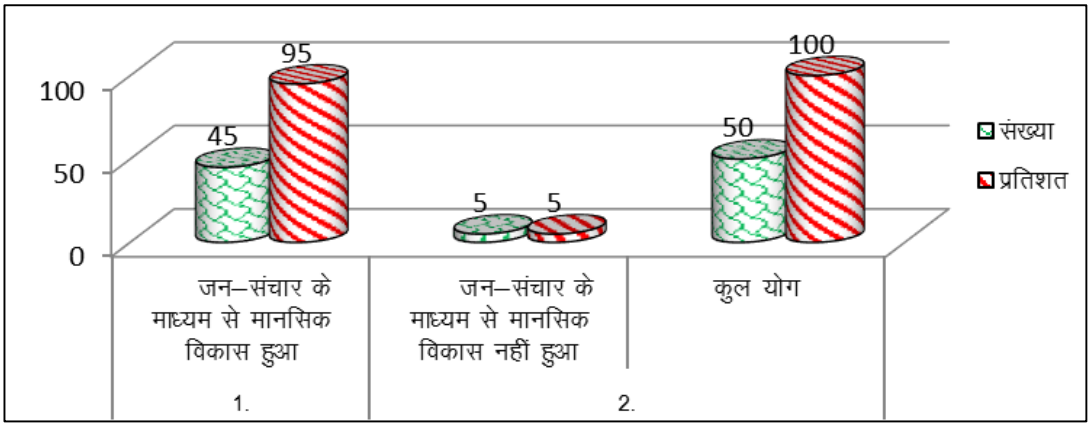

तालिका 2: युवा एव जागरूकता

क्र0	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	जागरूकता आई हैं	30	60
2.	जागरूकता नही आई	10	20
3.	कोई उत्तर नहीं	10	20
	कुल योग	50	100

तालिका क्र0 2 से विश्लेषण से स्पष्ट है, जनसंचार से युवाओं में जागरूकता आई है 60 प्रतिशत वही 20 प्रतिशत मानते है की जागरूकता नही आई है तथा 20 प्रतिशत नें इस प्रश्न का कोई उत्तर नही दिया।

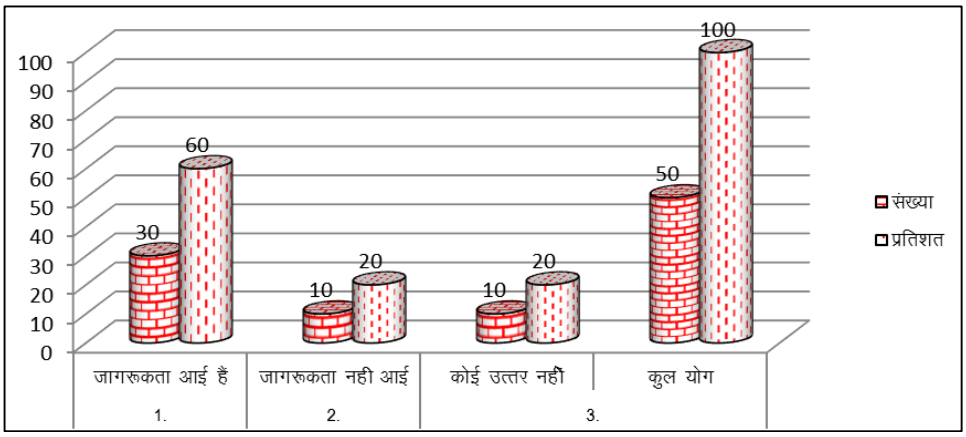

तालिका 3: युवाओं कि आर्थिक का विवरण

क्र0	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	आर्थिक स्थिति मजबूत हुयी	30	60
2.	आर्थिक स्थिति मजबूत नही हुयी	10	20
3.	कोई उत्तर नहीं	10	20
	कुल योग	50	100

तालिका क्र0 3 से स्पष्ट है जन–संचार के माध्यम से 60 प्रतिशत युवा मानते है की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है। 20 प्रतिशत युवाओं का विचार है की अर्थिक विकास नही हुई है। 20 प्रतिशत से इस प्रश्न का कोई जबाब नही दिये।

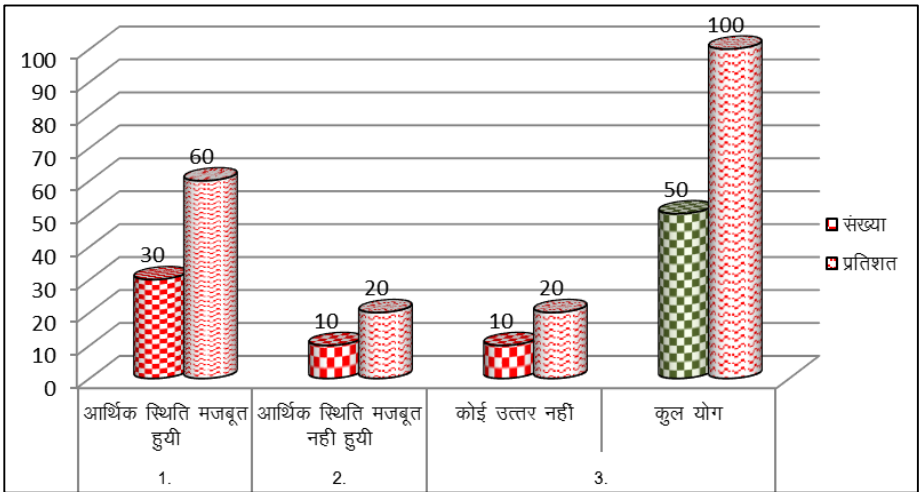

9. निष्कर्ष एवं सुझाव:

उपयुक्त तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है की जन–संचार के माध्यम से युवाओं के जीवन में प्रभाव देखा गया हैं, तथा उनमें जागरूकता का संचार हुआ है, तथा सुचनाओं को प्राप्त करके उन्होंने अपना अर्थिक सुदृढ़ीकरण भी किया है। इस शोध पत्र के माध्यम से कुछ सुझाव भी दिये जा रहे है जो निम्नानुसार है–

1. ग्रामीण नगरी क्षेत्रों में जनसंचार की उपलब्धता सरलता एवं सुगमता से उपलब्ध कराये जावे।
2. मनोरंजनात्मक दृष्टि की जगह कुटीर उद्योगों और सामुदायिक कार्यो पर केंद्रित कार्यक्रमों को जनसंचार माध्यमों को युवाओं तक पहुॅचाना चाहिए।
3. जनसंचार द्वारा युवा पीढी से श्रम एवं सुजनात्मक कार्यो की ओर प्रेषित करने के कार्यक्रमों की समावेश होना चाहिए।
4. जनसंचार मध्यमों का शिक्षा, संस्थान एवं सामाजिक जीवन में प्रयोग दूरदर्शन तथ्यों को ध्यान में रख कर किया जाना चाहिए, जिससे युवा भ्रमित न हो सके।

10. सन्दर्भ एवं ग्रन्थ सूची:

1. कुदरा डॉ0 बलवीर जनसंचार बदलते परिपेक्ष्य मे तथा शिला प्रकाशन नई दिल्ली 2009.
2. पचौरी सुधीर टलीविजन दशा और दिशा विभाग सुचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार 1994.
3. राजगढ़िया विष्णु, जनसंचार विभाग और अनुप्रयोग राधाकृष्णन प्रकाशन लिमिटेड़ नई दिल्ली 2008.
4. रटू डॉ. कृष्ण कुमार, दृश्य–श्रव्य जनसंचार माध्यम राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर
5. डॉ. वर्मा एवं सुजाता जन संचार एवं विज्ञापन ज्ञानोदय प्रकाशन कानपूर 2007.